श्रमण परम्परा में मानव मूल्यों का संवर्धन

डॉ0 चन्दा राय

'समण' शब्द समता भाव का परिचायक है। समता से अभिप्राय यह है कि सभी का आत्मतुल्य समझना सभी के प्रति समभाव रखना। दूसरों के साथ कैसा व्यवहार होना चाहिए, इसकी कसौटी स्वयं अपनी आत्मा है। ''आत्मन प्रति कूलानि परेषां न समाचरेत्'' का स्वर ही समता की अन्तरात्मा है। 'शमन' का शाब्दिक अर्थ है–अपनी वृत्तियों को शान्त रखना। मन में क्रोध या निकृष्ट वृत्तियों को, मृदुता तथा सरलता इत्यादि द्वारा शांत करना शमन का लक्ष्य है। यही संस्कृति का एकांगी रूपान्तर है। श्रमण, समन, शमन इस संस्कृति का सारतत्व है। श्रमण संस्कृति के अन्तर्गत जैन व बौद्ध दोनों परम्पराएँ आती है।

मानव सभ्यता के उषाकाल में श्रमण परम्परा का प्रकाश सत्यान्वेषी भारतीयों के निर्मल मानस पर पड़ा। अतः उत्तर गंगा की घाटी में जिस श्रमण परम्परा का जन्म हुआ उसी के अक्षय देन (जम्बूद्वीप) भारत के मनुष्यों के साथ विश्वमानव को भी जैन एवं बौद्ध रमणों की निवृत्तिमार्गी जीवन–शैली 'मानव–गरिता' को बोध कराने में कालजयी भूमिका अतः श्रमण परम्परा की दृष्टि का अनुगमन कर वर्तमान वैश्विक समाज की विषमताओं धर्म, जाति, वर्ग इत्यादि के प्रति सम्यक् दृष्टि के अभाव से उत्पन्न दिग्भ्रमिता से छुटकारा दिलाया जा सकता है। जैसे–गौतम एवं पुत्र निधन से हृदय विदीर्ण महिला के संवाद से स्वयमेव स्पष्ट हो जाता है।